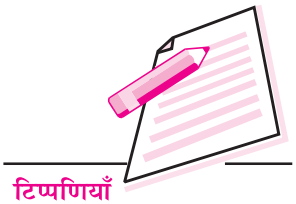

7

भारत की मंचीय कला की विरासत

भारत अपनी विशाल वैविध्यपूर्ण संस्कृति के लिए जाना जाता है। किसी अन्य देश की तरह भारत की भी अपनी सांस्कृतिक विरासत के कई पहलू हैं। इस अध्याय में हम संगीत, नृत्य और रंगमंच की चर्चा करेंगे। सांस्कृतिक विरासत के एक महत्वूर्ण घटक के रूप में इसका पर्यटन के साथ महत्वपूर्ण संबंध है। किसी भी समाज विशेष के लोगों के जीवन में इन कलाओं के माध्यम से उनके जीने के तरीके का संकेत मिलता है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- मंचीय कलाओं के क्षेत्र; जैसे – संगीत, नृत्य और रंगमंच के विकास की चर्चा कर सकेंगे और
- संगीत, नृत्य और रंगमंच के महत्व की व्याख्या कर सकेंगे।

7.1 संगीत

भारतीय लोगों के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त विविधता को देखा जा सकता है। यह विविधता कलाओं, विशेषत: मंचीय-कलाओं के क्षेत्र में देखी जा सकती है। जो विदेशी यहाँ आए उन्हें भारतीय लोगों ने अपनाया यह भारतीयों के विशाल हृदय को दर्शाता है। भारत ने न केवल इन विदेशियों को उदारतापूर्वक अपनाया, बल्कि उनका प्रोत्साहन कर अपने जीवन का अंग भी बनाया। यदि हम विभिन्न क्षेत्रों में संगीत का विकास देखें, तो यहाँ की विविधता में एकता को कोई भी अच्छी तरह से समझ सकता है और इसकी प्रशंसा कर सकता है।

आप जिस स्वर या राग की सुनकर प्रशंसा करते हैं उसे संगीत के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। यह प्राकृतिक रूप में खूबसूरत पहाड़ियों में झरने की आवाज़ हो सकती है अथवा इसे स्वर ध्वनियों से भी उत्पन्न किया जा सकता है। इन रागों की मधुरता को वाद्ययंत्रों से उन्नत किया जा सकता है। संगीत के क्षेत्र में इन वाद्ययंत्रों का अविष्कार किया गया, उन्हें संशोधित किया गया और रागों के विविध प्रकार के लिए प्रयोग किया गया।

टिप्पणियाँ

मोटे तौर पर संगीत को तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है:

(1) हिंदुस्तानी

(2) कर्नाटक

(3) लोकसंगीत

हिंदुस्तानी संगीत भारत-तुर्की-फ़ारसी संगीत का मिश्रण है। सल्तनत काल में विभिन्न संगीत परंपराओं का समावेशन शरू हो गया था। 13वीं सदी में मंचीय कला प्रदर्शित करने वाले व्यक्तियों को देखा जा सकता है। यह इतिहास में दर्ज है कि किलोखरी (दक्षिणी दिल्ली) में संगीतकारों, सुंदर चेहरे वाले मनोरंजकों, विदूषकों और भाँड़ों की एक कालोनी हुआ करती थी। इसमें रहने वाले लोग फ़ारसी संगीत और छंग, रूबब, कमंचा, मसकक, नाच और तंबूर वाद्ययंत्रों को बजाने में प्रशिक्षित थे। कव्वाल और गज़ल की रचना सुल्तान की प्रशंसा करने के लिए की जाती थी। भारत भ्रमण करने वाले यात्री इब्न-ए-बतूता ने अपनी किताब में दिल्ली में हौज खास के निकट संगीतकारों की एक अलग कॉलोनी के विषय में लिखा है, जिसे ताराबाद (संगीत का शहर) कहा जाता था। इसी प्रकार की एक कॉलोनी को दक्कन में दौलताबाद के पास बसाया गया था। इसमें एक मस्जिद का भी उल्लेख मिलता है जिसमें महिला संगीतकारों द्वारा नमाज (प्रार्थना) अदा की जाती थी। हमें उन महिला कलाकारों का परिचय जिनमें लुली, हुरूकी, डोमिनी, कंचनी और कामाचीनी थी जो संपन्न वर्गों के विवाह समारोह में भाग लिया करती थीं।

कुछ ऐसे विख्यात संगीतकार हैं जिनका नाम हमेशा अमर रहेगा। यहाँ हम ऐसे दो विख्यात संगीतकारों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत करेंगे जिन्हें भारतीय संगीत में योगदान के लिए याद किया जाता है। इनमें पहले हज़रत अमीर खुसरो और दूसरे मियाँ तानसेन हैं।

अमीर खुसरो (1253-1325 सी.ई.)

अमीर खुसरो, जिन्हें 'तुती-ए-हिंद' (भारत का तोता) के नाम से भी जाना जाता था। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के 'एटा' जिले के गाँव पटियाली में हुआ था। उन्हें उनके साहित्यिक योगदान और देशभक्ति के लिए जाना जाता है। उन्होंने संगीत की विभिन्न कलाओं जैसे - अरबी, फ़ारसी और भारतीय संगीत को सीखा। भारतीय संगीत के विषय में लिखते हुए वह कहते हैं कि ''भारतीय संगीत जो लोगों के दिल और आत्मा में बसता है, किसी भी अन्य देश के संगीत से कहीं बेहतर है।'' भारतीय संगीत में अरबी और फ़ारसी का मिश्रण करके उन्होंने इसे और अधिक गरिमामय बनाया। उन्होंने कई रागों की भी खोज की। उदाहरण के लिए कव्वाली और तराना रागों की खोज अमीर खुसरों ने ही की थी।

इस संदर्भ में एक छोटी सी रोचक घटना को उद्धृत किया जा सकता है। सुल्तान अलाउद्दीन (1296-1320) ने एक बार एक प्रमुख संगीतकार नायक गोपाल को राग सुनाने के लिए आमंत्रित किया। अमीर खुसरो से नायक गोपाल का सामना हुआ और उसे अपनी शैली को प्रदर्शित करने के लिए कहा गया। नायक ने जब अपनी शैली के सातवें चरण को पूरा किया तब अमीर खुसरो ने दावा किया कि गोपाल नायक ने जितने भी रागों को सुनाया है वो सभी अमीर-खुसरो की

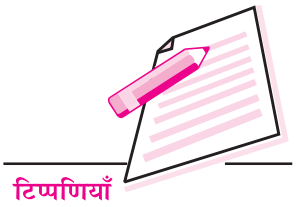

ही खोज थे। हालाँकि गोपाल नायक दक्षिण भारत और अमीर खुसरो उत्तर भारत के संगीत के दो महासागरों को मिलाने वाले स्रोत थे। खुसरो ने स्वयं यह दावा किया था कि उन्होंने संगीत रचना के तीन खंड लिखे थे। सितार की खोज के लिए भी उन्हें जाना जाता है। शेख निज़ामुद्दीन के प्रिय शिष्यों में वे एक थे। शेख निज़ामुद्दीन की दरगाह के पास ही उनके मृत शरीर को दफ़नाया गया था।

चित्र 7.1: एम. हबीब द्वारा दिल्ली के हज़रत अमीर खुसरो के चित्र की प्रतिलिपि

तानसेन

अपने समय के एक महान संगीतकार तानसेन बघेलखंड (1555–1592 ई.) के राजा राम चंद्र के दरबारी थे। उनका जन्म ग्वालियर में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वे महान संगीतकार हरिदास के शिष्य थे। उनके संगीत की ख्याति सुनकर सम्राट अकबर ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया था। संगीत के क्षेत्र में उनकी ख्याति को ऐतिहासिक पन्नों पर इस प्रकार लिखा गया है– ''तानसेन एक कलावंत थे – संगीत विज्ञान के क्षेत्र में उनके जैसा उनका समकालीन कोई नहीं था। उनके जैसी मधुर संगीत रचना गाने वाला कोई और नहीं था और न ही उनके समान उत्कृष्ट रचनाएँ संकलित करने वाला कोई था। राजा उनकी योग्यता की बहुत सराहना करते थे और उन्हें बहुत पसंद करते थे। जब सम्राट अकबर ने उनकी ख्याति सुनी तो उन्होंने तानसेन को अपने दरबार में प्रस्तुत करने के लिए कहा। जब तानसेन उनके दरबार में पहुँचे तो सम्राट ने पहले दिन उन्हें दो करोड़ दिरहम दिए जिनका वर्तमान में मूल्य दो लाख रुपये है। अकबर तानसेन के प्रदर्शन को देखकर मोहित हो गए थे। यह तुजुक-ए-जहाँगीरी में भी वर्णित है कि ''फतेहपुर सीकरी के सूफ़ी संत सलीम चिश्ती ने मरते समय अपनी अंतिम इच्छा के रूप में तानसेन को सुनना चाहा था। तुजुक-ए-जहाँगीर के उल्लेख में उन्होंने (सूफ़ी) सम्राट (अकबर) के पास किसी को तानसेन का राग सुनने के लिए भेजा था। तानसेन को संगीत की ध्रुपद शैली को विकसित करने का श्रेय दिया जाता है।

चित्र 7.2: तानसेन

टिप्पणियाँ

तानसेन की स्मृति में प्रत्येक वर्ष ग्वालियर में एक संगीत सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। ग्वालियर घराना जिसे सेनिया घराना के नाम से भी जाना जाता है, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का सबसे प्राचीन घराना है जिसका संबंध तानसेन से है। इस समारोह को देखने के लिए अधिकतर पर्यटक ग्वालियर शहर में आते हैं।

कर्नाटक संगीत

संगीत जगत में कर्नाटक संगीत के विकास का अपना इतिहास है। दक्षिण भारत में संगीत मुख्यत: ईश्वर में समर्पण से जुड़ा हुआ है। मंचीय कला के तीन रूपों (1) संगीत (2) नृत्य (3) गायन का एक साथ उपयोग ईश्वर को खुश करने के लिए किया जाता है। अत: ये मंचीय कलाएँ देवदास से भी संबंधित है जिन्हें ईश्वर का भक्त (दास) भी कहा जाता है। दक्षिण भारतीय संगीत को कर्नाटक संगीत के नाम से जाना जाता है जिसे भक्ति-संतों ने पहचाना। ये संत इस संगीत से स्वयं को जोड़कर ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए 8वीं सदी में प्रयोग किया करते थे। यहीं से गुरु-शिष्य परंपरा का जन्म हुआ और इसने कठिन अभ्यास से संगीतशास्त्र में अपना एक अहम स्थान बनाया।

सामरिक संगीत

महत्वपूर्ण संगीत प्रकारों में से सामरिक संगीत एक था। युद्ध के समय सैनिकों में जोश भरने के लिए इसे बजाया जाता था। महत्वपूर्ण सैनिक अभियानों में संगीतकार सेना के साथ चलते थे। अकबर के समय में हापा चारण (राजस्थान) और मियाँ लाल खान कलावंत (ग्वालियर) जाने-माने सामरिक संगीतकार थे। कश्मीर के साजिंद (गायक) भी प्रसिद्ध हैं जिन्हें जयपुर के राजपूत सेनापति कच्छवाहा ने अपने दरबार में रखा था। पश्चिमी राजस्थान में एक समुदाय है जिसे ढ़ाढ़ी कहा जाता है। इस समुदाय का पेशा शासकों के साथ युद्ध क्षेत्र में जाना तथा सैनिकों को दुश्मनों के विरुद्ध जोश भरना होता था। इनकी गायन-कला को सिंधू गायन के नाम से जाना जाता था। अत: गायकों के लिए सेना भी एक रोज़गार का क्षेत्र थी। हालाँकि, फुरसत के समय सैनिकों के मनोरंजन का साधन भी यही गायक होते थे।

लोक संगीत

लोक संगीत साधारण जनता और लोक-परंपरा का एक अंग है। समय के साथ लोक संगीत परिष्कृत, कृत्रिम और कुलीन द्वारा संरक्षित हो गया। इन्हें ही हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत का नाम दिया गया। लोक संगीत को किसी क्षेत्र अथवा पेशेवर समुदाय से जोड़कर पहचाना जा सकता है। लोक संगीत का अपना आकर्षण और लोगों को प्रभावित करने का अंदाज होता है। सामान्यतया कोई भी इन गायकों को संगीत मेलों, गलियों, बाजारों, रेलगाड़ियों और बसों में गाते बजाते हुए देख सकता है। गायकी की यह लोक-परंपरा परिवारों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती है। अत: ऐसे अनेक समुदाय हैं जिनका पेशा गायन है। परिवारिक आयोजनों में लोक संगीत को बजाने वाले समुदाय के रूप में डोम और मिरासी को जाना-पहचाना जाता है। थार (राजस्थान) रेगिस्तान में मांगणियार और लांगा पेशेवर गायक और संगीतकार हैं। लांगा समुदाय ने मंचीय कलाओं के प्रदर्शन में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनायी है।

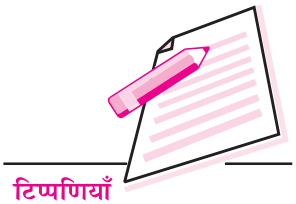

कश्मीर भी विश्व के विभिन्न भागों में बजाए जाने वाले संगीत को आपस में जोड़ने के लिए जाना जाता है। फ़ारस (आधुनिक ईरान, इराक) और मध्य एशिया नवीन संगीत उपकरणों और संगीत रूपों को प्रस्तुत करने वाले प्रमुख स्रोत थे। कर्नाटक संगीत अथवा दक्षिण भारतीय संगीत के उत्तर भारतीय संगीत में योगदान को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। दक्षिण भारत के संगीतशास्त्र की उत्कृष्टता ने कश्मीर के सुल्तान हसन शाह को अपनी ओर आकर्षित किया जिन्होंने दक्षिण के प्रसिद्ध कलाकारों को इसलिए आमंत्रित किया ताकि वे कश्मीर संगीत में कुछ तत्त्वों को शामिल करके इसे समृद्ध बना सकें। संगीत के प्रति हसन शाह के शौक ने संगीत विभाग की स्थापना की जिसका मुखिया श्रीवर को बनाया गया। सुल्तान युसूफ़ शाह की रानी हब्बा ख़ातून ने 'रस्त कश्मीर' राग को प्रस्तुत किया था। इस प्रकार, कश्मीरी संगीत ने भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। आमेर (जयपुर) के राजा ने कश्मीरी संगीतकारों को अपनी सेना में नियुक्त किया। कश्मीर के लोक संगीतों में छकरी, तंबूर नग़मा और बचा नग़मा शामिल है। इन गीतों को समूह में छोटे से नृत्य के साथ गाया जाता है।

7.2 वाद्य-यंत्र

भारतीय संगीत के विविध उपकरणों – बाँसुरी, तानपुरा, तबला, वीणा, सितार, शहनाई, सरोद, सारंगी, संतूर, मृदंग इत्यादि का उपयोग प्रसिद्ध गायक एवं कलाकार करते हैं।

बाँसुरी

बाँसुरी का ज़िक्र वैदिक काल से मिलता है। बाँसुरी हवा से बजने वाला उपकरण है जिसमें छिद्रों से हवा का प्रवाह होने से आवाज निकलती है। उच्च श्रवता के लिए बाँसुरी में वृहत वायुधारा और हवा की गति का वेग ज़्यादा होना चाहिए। इसे ध्वनि छिद्रों को बढ़ा कर तेज़ किया जा सकता है।

चित्र 7.3: बाँसुरी

विभिन्न अवसरों पर बजने वाली बाँसुरियों के विभिन्न प्रकार होते हैं। बाँसुरी को सांची, अमरावती की मूर्तियों तथा अजंता और एलोरा के चित्रों में देखा जा सकता है। बाँसुरी भगवान कृष्ण से भी संबंधित है। बाँसुरी एक भारतीय वाद्य यंत्र है जो अब पश्चिमी संगीत और आर्क्रेस्ट्रा का हिस्सा बन गया है।

तंबूरा अथवा तानपूरा

यह एक तारों से बना लंबी गर्दन वाला उपकरण है। आकृति में यह सितार जैसा दिखता है। उत्तर भारत में इसे तंबूरा के नाम से जाना जाता है। इसमें चार या पाँच तार होते है जो आयताकार रूप में एक के बाद दूसरे तार की समान दूरी पर लगा होता है जो मूल स्वर को बजाने से श्रुतिमधुर ध्वनि उत्पन्न करते है। तंबूरा नाम को 'तान' शब्द से लिया गया है जो संगीत की भाषा से जुड़ा है। 'पूरा' का अर्थ 'पूर्ण' है। दक्षिण में तंबूरा को लकड़ी से और उत्तर भारत में सुखे कद्दू से बनाया जाता है।

चित्र 7.4: तम्बूरा

तबला

यह भारत का अत्यधिक प्रसिद्ध वाद्ययंत्र है जिसका प्रयोग हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, भक्ति-संगीत और संगीतपूर्ण महफिलों में किया जाता है। भारत के मशहूर तबला वादक ज़ाकिर हुसैन को वर्ष 1992 में सर्वोत्तम संगीत एलबम बनाने के लिए ग्रेमी पुरस्कार से नवाज़ा गया था।

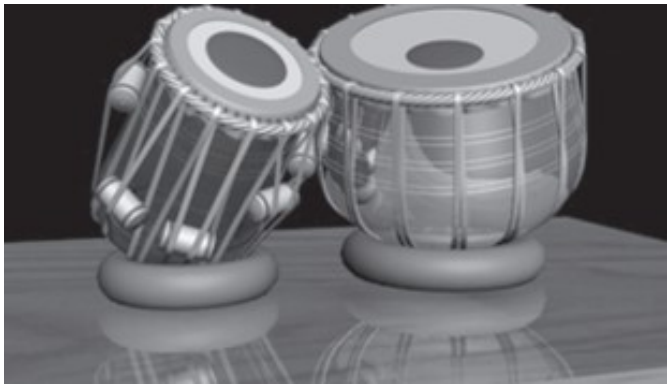

चित्र 7.5: तबला

वीणा

वीणा भी एक प्राचीन वाद्ययंत्र है जिसका उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है। दक्षिण भारत का यह सबसे लोकप्रिय संगीत उपकरण है जिसे सरस्वती वीणा के नाम से भी जाना जाता है। यह तारों को खींचकर निर्मित किया गया उपकरण है जिसे कर्नाटक संगीत में सहयोग के लिए तैयार किया गया है। वीणा के अनेक परिवर्तित रूप हैं जो दक्षिण भारतीय वीणा रूप के परिवार से है।

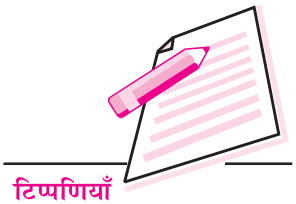

चित्र 7.6: वीणा

सितार

भारतीय शास्त्रीय संगीत को पश्चिमी श्रोताओं से अवगत कराने में सितार ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वीणा परिवार में इसे कोरडोफोन के रूप में वर्गीकृत किया गया है। सितार में सामान्यतया सात तार लगे होते है जिसमें पाँच स्टील के और दो पीतल के होते है। इसकी आवाज उप-महाद्वीप में रहने वाले लोगों के विचारों और भावनाओं को ताज़ा करती है। यह खिंचे हुए तारों का एक उपकरण है जिसका उपयोग हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में मुख्य रूप से होता है। पंडित रविशंकर (1920-2012) एक विख्यात सितार वादक थे। उन्हें वर्ष 1999 में भारतरत्न से सम्मानित किया गया। उन्हें तीन ग्रेमी पुरस्कारों से नवाज़ा गया था।

शहनाई

शहनाई की एयरोफोनिकम वाद्य-यंत्रों की श्रेणी में शामिल किया गया है। भारत में यह अत्यधिक लोकप्रिय वाद्ययंत्र है। इसे उत्तरी भारत में होने वाले विवाह समारोहों और जुलूसों में बजाया जाता है। यह ट्यूब की तरह दिखने वाला उपकरण है जो अपने नीचे के सिरे की तरफ़ चौड़ा होता है। यह माना जाता है कि शहनाई मिस्र से फारस और फ़ारस से भारत में आई। मिस्र के गुम्बदों पर शहनाई को उकेरा गया है और कुछ चित्रकलाओं में भी शहनाई को चित्रित किया गया है। भारत में सबसे मशहूर शहनाई वादक उस्ताद बिसमिल्लाह खाँ (1913-2006) थे। जिन्हें वर्ष 2001 में भारतरत्न से सम्मानित किया गया था।

चित्र 7.7: शहनाई

नाग स्वरम्

नाग स्वरम् आकार में शहनाई से लंबा होता है। इसे नाद स्वरम के नाम से भी जाना जाता है। इसे तमिलनाडु का सबसे प्राचीन और अनोखा वाद्य-यंत्र माना जाता है। इस उपकरण को संगीत एवं देवत्व का एक दुर्लभ संयोग कहना सर्वथा उचित होगा, क्योंकि इसे सबसे शुभ वाद्य-यंत्र माना जाता है। मंदिरों में पाया जाता है और इसे त्योहारों पर बजाया जाता है।

सरोद

भारतीय शास्त्रीय संगीत के वाद्य-यंत्रों में सरोद भी एक है। यह तारों से बना हुआ संगीत का एक उपकरण है। कहा जाता है कि सरोद की नींव की प्रेरणा रबाब से मिली प्रतीत होती है जिसका अविष्कार अफगानिस्तान और कश्मीर में किया गया था। यह भी माना जाता है कि सरोद वास्तव में बास रबाब है। उस्ताद अमज़द अली खान एक मशहूर सरोद वादक हैं। वर्ष 2001 में उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

चित्र 7.8: सरोद

सारंगी

सारंगी में धनुष आकार का तार होता है। सारंगी भारत का प्रतिनिधित्व करती है। सारंगी शब्द को हिंदी के दो शब्दों से बना माना जाता है – 'साउ' जिसका अर्थ है सौ तथा 'रंग' जिसका अर्थ – रंग होता है। इसे सारंगी इसीलिए कहा जाता है, क्योंकि इस उपकरण का संगीत आनंददायक और संप्रेषणशील होती है। यह संगीत के विभिन्न रूपों को भी इंगित करती है। यह कहा जाता है कि सारंगी की आवाज़ मानव आवाज़ के बहुत समीप है और इसीलिए इसे भारत में सबसे अच्छा सहयोगी वाद्य-यंत्र माना जाता है।

चित्र 7.9: सारंगी

संतूर

संतूर कश्मीरी लोक-संगीत का एक उपकरण है। यह एक लोकप्रिय वाद्य-यंत्र है। इसे मुख्यत: सूफ़ी कलाम गाने में प्रयुक्त किया जाता है। यह देखने में समलंबाकार आकृति का संगीत उपकरण है। सामान्यतया इसे अखरोट की लकड़ी से बनाया जाता है। इसमें अनेक तार लगे होते हैं। इसे प्राचीन समय के शत्-तंत्रीवीणा नामक वाद्ययंत्र से संबद्ध बताया जाता है। लकड़ी की एक हल्की छड़ी से संतूर को बजाया जाता है जिसे 'मेज़राब' कहते हैं। संतूर बजाते समय इन मेज़राबों को तर्जनी और मध्यमा उँगलियों द्वारा पकड़ा जाता है।

चित्र 7.10: संतूर

मृदंग

मृदंग का शाब्दिक अर्थ चिकनी मिट्टी है। यह दक्षिण भारत का एक लोकप्रिय वाद्य-यंत्र है जो कर्नाटक संगीत प्रदर्शित करने वालों को ताल प्रदान करता है। मृदंग एक शास्त्रीय वाद्ययंत्र है जो आघात से बजता है। यह विभिन्न नामों मृदंग, मृदंगम, मरूदगंम और मृथंगम नामों से जाना जाता है। एक छोटे मृदंग को बंगाल में खोल अथवा श्रीखोल कहा जाता है।

गोट्टू वाद्यम

गोट्टू वाद्यम को चित्रवीणा, महा नाटक वीणा नामों से भी जाना जाता है। यह एक दुर्लभ यंत्र है जिसे भारत के दक्षिणी भागों में बजाया जाता है। गोटूवाद्यम की लंबाई 2-3 फीट होती है और यह हथौड़े के आकार की वीणा के समान होता है। तंबूरे की तरह यह गर्दन के सहारे पर अवस्थित होता है और इसमें चार तार लगे होते हैं। कई बार इसे मृदंग के द्वितीय सहायक उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाता है।

चेंडा

बेलनाकार आकृति का वाद्य-यंत्र चेंडा केरल और कर्नाटक के कुछ भागों में बहुत लोकप्रिय है। यह वीणा जैसा वाद्य-यंत्र है और इसे कर्नाटक में चेंडे कहा जाता है। यह केरल में हिंदू

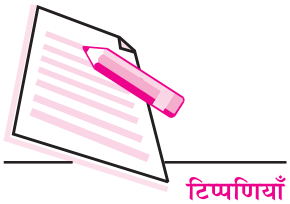

टिप्पणियाँ

धार्मिक कला के रूप में प्रयुक्त होता है। केरल में चेंड़ा का प्रयोग कथकली और कूडियाट्टम नृत्यों में और सामाजिक अनुष्ठानों में होता है।

रबाब

रबाब अरब का राष्ट्रीय वाद्य-यंत्र है। यह भारत में मध्य एशिया से अफ़गानिस्तान होते हुए पहुँचा। यह कश्मीर का सबसे लोकप्रिय वाद्य-यंत्र था और अकबर के समय में भी काफ़ी लोकप्रिय था। रबाब की पहचान मियाँ तानसेन के कारण बनी। तानसेन के शिष्यों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है- पहला रबाबीयास और दूसरा बीनकरास। उस्ताद प्यार ख़ान और बहादुर ख़ान मशहूर रबाबीयास थे।

ढोल, ढोलक, धाक

ढोल अत्यंत लोकप्रिय वाद्य-यंत्र और लोक-संगीत का प्रमुख अंग है। भारत में विभिन्न प्रकार के ढोल पाये जाते हैं। ये परिष्कृत से लेकर आदिवासियों और सामान्य लोगों द्वारा बजाए जाने वाला वाद्य-यंत्र हैं। बंगाल में ढोल बहुत लोकप्रिय है। ढोल का आकार ढोलक से बड़ा पर धाक से छोटा होता है और भारत के उत्तरी क्षेत्रों में यह बहुत लोकप्रिय है। धाक बंगाल में पूजा-समारोहों में बजाया जाता है।

खंजीरा

खंजीरा को खंजरी भी कहा जाता है। लोकगीतों एवं धार्मिक समारोह में बजाया जाने वाला यह सबसे प्राचीन वाद्य-यंत्र है। दक्षिण भारत के शास्त्रीय संगीत में इसका अहम स्थान है।

पखावज

पखावज दक्षिण भारतीय वाद्य-यंत्र मृदंग का छोटा रूप है। उत्तरी भारतीय संगीत में इसका विशेष स्थान है। ध्रुपद प्रकार की गायकी में इसका प्रयोग किया जाता है। मुगल शासन के दौरान स्वर, संगीत और नृत्य में इस महत्वपूर्ण वाद्य-यंत्र का प्रयोग किया जाता था।

भारतीय संगीत जगत आगे चलकर पश्चिमी वाद्य-यंत्रों जैसे वायलन, हारमोनियम, गिटार, कलेरिनेट और मंडोलीन के समावेशन से समृद्ध हुआ।

क्रियाकलाप 7.1

जब आप ढोल की आवाज़ सुनते हैं तो आप पर विशेष प्रकार का प्रभाव पड़ता है। किन्हीं तीन अन्य वाद्य-यंत्रों को सुनकर अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक भावनाओं को दर्ज करें।

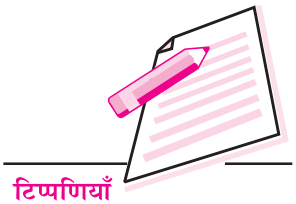

पाठगत प्रश्न 7.1

1. लोक संगीत पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

2. हिंदुस्तानी संगीत, कर्नाटक संगीत से किस प्रकार भिन्न है? उल्लेख कीजिए।

7.3 नृत्य

नृत्य एक प्राकृतिक अभिव्यक्ति है जिसका प्रादुर्भाव सौंदर्यात्मक भावना और शारीरिक क्रियाकलापों और हाव-भावों से जुड़ा हुआ होता है। ये प्राकृतिक सौंदर्यात्मक और रचनात्मक भाव ईश्वर को प्रसन्न करने से संबंधित थे। नृत्य का धर्म से जुड़ाव व्यापक प्रशंसा प्राप्त करने का कारण बना, लेकिन समय के साथ नृत्य के गैर-धार्मिक रूपों का भी विकास हुआ। इस प्रकार के नृत्यों को लौकिक नृत्य कहा जाता है जो विशिष्ट और दरबारी संस्कृति का भाग थे। नृत्य संस्कृति को सिंधु घाटी सभ्यता में खोजा जा सकता है। इसका प्रमाण दो प्रतिमाओं से मिला था। इनमें से एक हड़प्पा से प्राप्त पुरुष नर्तक के धड़ से पता चलता है। दूसरा मोहनजोदड़ों से प्राप्त महिला नर्तकी की आकृति है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नृतकों का जासूसी कार्य में लगे होने का संदर्भ मिलता है।

मध्यकाल के दौरान दो प्रकार के नृत्य थे। विशिष्ट वर्ग के लोगों के लिए शास्त्रीय नृत्य था और सामान्य जनता के लिए वे नर्तक होते थे जो मेलों, बाज़ारों, गलियों में नृत्य करते थे। व्यापारी लोग नर्तकियों और संगीतकारों को अपने साथ रखते थे और समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर उनके कार्यक्रम आयोजित करते थे।

चित्र 7.11: नृत्य करते हुए सूफ़ी, लगभग 1610 ईसवीं द्वारा अबूल हसन

उनकी कलाओं को सवाँरने के लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जाता था। ये कलाकार सुंदर गहने तथा आभूषण पहनते थे। गुजरात में हमें पुरुष नर्तकों का उल्लेख मिलता है। नृत्यकला में पारंगत व्यक्ति थे- मोहनराव, रंगराव, देशीराव और कान्हुराव। नृत्यकला के कौशल को पातरबाज़ी कहा जाता था। अत: नृत्य करने वाली लड़कियों को पतूर और पातर कहा जाता था। इन नर्तकों का कार्य गुप्त भावनाओं और सांसारिक आनंद को जागृत करना था, जबकि धार्मिक लोग आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति हेतु नृत्य करते थे। हमें 17वीं शताब्दी में सूफ़ी संतों द्वारा बनाई चित्रकला से इस प्रकार के नृत्य का पता चलता है जिसे समा कहा जाता था। मंदिरों में भी नर्तकियाँ होती थीं जिन्हें देवदासी कहा जाता था। वे भगवान को प्रसन्न करने के लिए नृत्य किया करती थीं।

हम नृत्यकला को दो भागों में बाँट सकते हैं:

1. शास्त्रीय नृत्य
2. लोकनृत्य

पाठ-11 में आप भारत में प्रचलित लोकप्रिय शास्त्रीय नृत्यों के रूपों; जैसे- भरतनाट्यम, मोहिनी अट्टम, मणिपुरी, ओड़िसी, कथकली, कथक और कुचीपुड़ी इत्यादि के विषय में पढ़ेंगे।

लोकनृत्य

लाई हराओबा

लाई हराओबा का शाब्दिक अर्थ 'ईश्वर का त्योहार' है। मणिपुर में किसी त्योहार के दौरान इस नृत्य के विभिन्न रूपों का प्रयोग करके ब्रह्माण्ड की रचना एवं उसके विनाश को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह नृत्य पूजा करने वाले विशेष पुरुष और महिला करते हैं, जिन्हें क्रमश: माइबा और माइबी कहा जाता है।

चित्र 1.12: लाई हराओबा

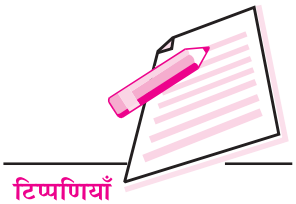

करागम

यह तमिलनाडु में प्रचलित नृत्य का एक रूप है। इसमें नर्तक समूह में नृत्य करते हैं। इस नृत्य में मुख्य नर्तक अपने सिरों पर चावल और पानी से भरे हुए घड़ों को रखकर नृत्य करते हैं। यह समूह अंत में जल एवं स्वास्थ्य की देवी के मंदिर जाते हैं। परंपरा के अनुसार यह नृत्य अगस्त महीने में किया जाता है।

चित्र 7.13: करागम

झीका दसेन

यह संथाल, झारखंड में संथाल आदिवासियों द्वारा किया जाने वाला लोकप्रिय नृत्य है। यह नृत्य पूजा के प्रकार जैसा है। संथालों की धारणा के अनुसार, इस नृत्य को करके कोई भी दैवीय शक्ति प्राप्त कर सकता है।

जागर

जागर नृत्य उत्तर भारत के उत्तराखंड के क्षेत्रों कुमाँऊ और गढ़वाल में ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। इस नृत्य में अनेकानेक पौराणिक एवं काल्पनिक गाथाओं के गीतों को गाया जाता है। स्त्री एवं पुरुष दोनों इस नृत्य में भाग लेते हैं।

भक्ता

भक्ता नृत्य चैत्र (चंद्र कैलेंडर के अंतिम महीने) मास में मयूरभंज (उड़ीसा) में किया जाता है। इसे त्योहार के रूप में तेली समुदाय द्वारा मनाया जाता है। यह अंतिम पंद्रह दिनों तक चलता है।

गरबा

गरबा गुजरात का एक लोकप्रिय नृत्य है। गरबा शब्द संस्कृत भाषा के शब्द गर्भा (गर्भ) और दीप (छोटा दीया) से लिया गया है। इस नृत्य को नवरात्र के अवसर पर किया जाता है। परंपरागत रूप से गरबा नृत्य को जलते हुए दीपक अथवा देवी शक्ति की प्रतिमा के चारों और इक्ट्ठा होकर किया जाता है। यह उत्सव नौ रात्रियों में किया जाता है। इस नृत्य में स्त्री और पुरुष दोनों भाग लेते हैं। इस नृत्य को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होते हैं। इस दौरान देश-विदेश से आए पर्यटकों से गुजरात भर जाता है।

चित्र 7.14: गरबा

कवाडि अट्टम

इस नृत्य का संबंध तमिलनाडु से है और यह केवल पुरुष नर्तकों द्वारा ही किया जाता है। कवाडि नृत्य का उद्भव प्राचीन सुमय में तमिल लोगों द्वारा धार्मिक स्थानों की यात्रा करने के समय से माना जाता है। अपने मनोरंजन के लिए ये लोग लंबी यात्रा गाकर और नाच कर किया करते थे। इस नृत्य में नर्तक द्वारा एक खंभे, जिसके दोनों किनारों पर घड़े बंधे होते थे व जिनमें दूध अथवा नारियल पानी भरा होता है, का संतुलन बनाकर किया जाता है।

गिद्धा

यह पंजाब का एक ओजपूर्ण लोकनृत्य है। इस नृत्य को केवल महिलाएँ ही करती हैं। इस नृत्य में ढोल के अलावा अन्य किसी वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता। औरतें गीत गाकर और ताली बजाते हुए वृत्ताकार में नृत्य करती हैं।

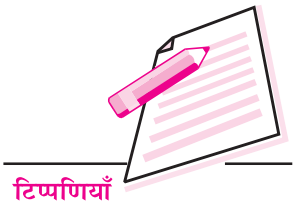

चित्र 7.15: गिद्धा

घूमर

घूमर राजस्थान का एक लोक नृत्य है, यह माना जाता है कि इसके उद्भव का श्रेय भील जनजाति को है। बाद में इसे राजस्थान के अन्य समुदायों ने भी अपना लिया। घूमर शब्द 'घूमना' से लिया गया है। इस नृत्य में देवी सरस्वती की पूजा की जाती है।

चित्र 7.16: घूमर

लावणी

लावणी शब्द 'लावण्य' से लिया गया है, जिसका अर्थ है सुंदरता। यह समस्त महाराष्ट्र राज्य में सबसे ज़्यादा लोकप्रिय नृत्य और संगीत के प्रकारों में से एक है। परंपरागत रूप से इसे केवल महिला कलाकार गीत गाकर करती हैं, परंतु किन्हीं विशेष अवसरों पर पुरुष भी लावणी गा सकते हैं।

चित्र 7.17: लावणी

टिप्पणियाँ

लावणी नृत्य के इस रूप को 'तमाशा' के नाम से जाना जाता है। लावणी परंपरागत गीत और नृत्य का मिश्रण है जिसे मुख्यत: ढोलक की थाप पर किया जाता है जो ड्रम की तरह का वाद्य-यंत्र होता है। खुबसूरत महिलाएँ नौ गज की साड़ी पहनकर इस नृत्य को करती हैं।

गीतों को तीव्रता के साथ गाया जाता है। छंद, उत्साह और लय जो आनंदकारी होते है, इस गीत में होते हैं। लावणी का प्रादुर्भाव महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के शुष्क क्षेत्रों में हुआ था।

बिहू

बिहू नृत्य असम में बिहू पर्व से संबंधित है। इस नृत्य में स्त्री और पुरुष दोनों भाग लेते हैं। इस नृत्य को असम के परंपरागत संगीत के साथ किया जाता है। असम में इस नृत्य के विभिन्न रूप हैं; जैसे - 'देओरी बिहू नृत्य', 'मिसिंग बिहू नृत्य' इत्यादि। सुख-दुख के भावों की अभिव्यक्ति इन सभी रूपों में होती है।

मोरूलम

यह गोवा का लोक नृत्य है जिसे शिगमों त्योहार के अवसर पर किया जाता है। मोरूलम नाम 'मोर' से लिया गया है। नर्तक मोर के पंखों और फूलों की मालाओं को गले में पहनकर यह नृत्य करते हैं। परंपरा के अनुसार देवी-देवताओं को जागृत करने के लिए इस नृत्य को किया जाता है।

डांडिया

डांडिया गुजरात का एक प्रसिद्ध लोकप्रिय नृत्य है। इस नृत्य को गरबा के साथ नवरात्रि के अवसर पर किया जाता है। गरबा और डांडिया के मध्य मुख्य अंतर है कि डांडिया लकड़ी की छोटी डंडियों से किया जाता है, जबकि गरबा में हाथ और पैरों की विभिन्न गतियों द्वारा किया जाता है।

भांगड़ा

पंजाब में फसलों की कटाई के अवसर पर इस नृत्य को किया जाता है। भांगड़ा को पंजाब में बग्गा (युद्ध नृत्य) के साथ जोड़कर देखा जाता है। विदेशों में भी पंजाबी लोग इस नृत्य को लेकर गये हैं। यह नृत्य ढोल की थाप और चिमटे की आवाज़ पर किया जाता है। भांगड़ा में गीतों को जोरदार आवाज़ और जोश के साथ गाया जाता है।

कलबेलिया

कलबेलिया राजस्थान के मशहूर नृत्यों में से एक है। कलबेलिया जनजाति के लोगों द्वारा इस नृत्य को किया जाता है। यह नृत्य इन लोगों की संस्कृति का एक हिस्सा है। इसमें स्त्री और पुरुष दोनों भाग लेते हैं। कलबेलिया जनजाति का मुख्य पेशा साँपों को पकड़ना था। अत: इस नृत्य में साँपों की विभिन्न गतियों को दिखाया जाता है।

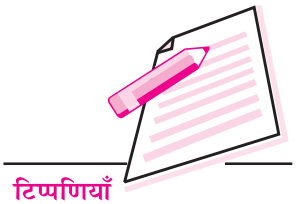

क्रियाकलाप 7.2

आपने त्योहार के अवसरों पर अपने आसपास अनेक नृत्य देखे होंगे। ऐसे किन्हीं दो नृत्यों पर अपने विचार लिखिए। जानकारी के आधार पर यह लिखने का प्रयास कीजिए कि (क) नृत्य करने वाले कौन हैं और नृत्य क्यों कर रहे हैं? (ख) क्या इसका कोई धार्मिक महत्व है? (ग) वे क्या गाते हैं, और उनके गाने का क्या अर्थ है? (घ) इसके पश्चात उन नर्तकों की भावनाओं को लिखें कि वे कैसे अपने हर्षोल्लास को नृत्य में शामिल करते हैं?

पाठगत प्रश्न 7.2

1. भारत के किन्हीं दो लोकनृत्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. मोरूलम का वर्णन कीजिए।
3. नृत्य पर एक टिप्पणी लिखिए।

7.4 भारतीय रंगमंच

रंगमंच की प्रथा काफी प्राचीन है और यह वेदों से जुड़ी है। रंगमंच शब्द नाटक की आरे संकेत करता है। नाटक में तीन मुख्य तत्व - संवाद, संगीत और नृत्य होते हैं। संस्कृत में नाटक शब्द के लिए नट, नाटक, नाट्य (अभिनेता और नाटक) शब्द प्रयुक्त होते हैं। आगे चलकर यह भी पता चला कि यह संस्कृत के मूल शब्द नृत, जिसका अर्थ है 'नृत्य' से बना है। अत: नाटक का उद्भव नृत्य से हुआ। नाटक की सुंदरता बढ़ाने के लिए इसमें संगीत जोड़ दिया गया। नाटक को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है।

1. मंच प्रदर्शन

मंच को तकनीकी रूप से जरजरा कहा जाता है। जरजरा के उद्भव की एक रोचक पौराणिक कथा है। जरजरा को इंद्र के वर्चस्व को स्थापित करने के रूप में माना जाता है। प्रदर्शन में दानवों अथवा राक्षसों को किसी भी प्रकार का विनाश करने से रोकना और अभिनय करने वालों को बल प्रदान करना भी इसका उद्देश्य था, ताकि वे अच्छा प्रदर्शन कर सकें। नाटक की रचना धार्मिक, पौराणिक और ऐतिहासिक विषयवस्तु पर आधारित होती थी। भारतीय नाट्य का सबसे प्राचीन और विश्वसनीय ग्रंथ भरत का 'नाट्यशास्त्र' है। संगीत और नाटक में पवित्रता लाने के लिए नाटक को पाँचवा वेद माना जाता है। नाटक में भाग लेने वाले कलाकारों को भरतपुत्र से संबोधित किया जाता हैं। वास्तव में भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की भौतिक मुद्राओं और हाव-भावों को जानने का मुख्य स्रोत मूर्तियाँ हैं। भारतीय संगीत और नृत्य ने कुलीन मुस्लिमों को कैसे प्रभावित किया, इसके बारे में घूमयातुल मुन्या नाम के गुमनाम फारसी लेखक ने 1374-75 में लिखा था। इसने संस्कृत के अनेक शब्दों को फ़ारसी में अनूदित किया था।

चित्र 7.18: मंच प्रदर्शन

13वीं शताब्दी में हमें स्त्री संगीतकारों एवं नर्तकियों के विषय मे जानकारी मिलती है। नुसरत ख़ातून और उसकी बेटी इस तरह की सांस्कृतिक कला में लोकप्रिय थीं। 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अबुल फ़ज़ल ने 36 पुरुष संगीतकारों की सूची बनाई है।

2. नुक्कड़ नाटक

नुक्कड़ नाटक मुख्यत: नुक्कड़ों, गाँवों के चौराहों, कारखानों के सामने, गाड़ी खड़ी करने वाली जगहों, खरीद केन्द्रों इत्यादि पर किए जाते हैं। ये मुख्यत: सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रकृति के होते हैं। नुक्कड़ नाटकों में दर्शकों और प्रदर्शन करने वालों के मध्य परंपरागत भेद अस्पष्ट है। नुक्कड़ नाटकों के अंतर्गत अन्य प्रदर्शन; जैसे- सड़क किनारे जादुई खेल दिखाना, तमाशा, विभिन्न प्रकार की आवाज़ निकालना इत्यादि भी आते हैं। ये नुक्कड़ नाटक स्वाभाविक रूप से काफ़ी पुराने हैं। यहाँ तक कि मध्यकालीन भारतीय समाज में भी इनके संकेत मिलते हैं। 17वीं शताब्दी में एक फ्राँसीसी यात्री जीन-बैपटिस्ट टेवेरियर ने सूरत से आगरा के रास्ते में एक मदारी के रोचक खेल को अपनी पुस्तक में लिखा है। वह बताता है, ''एक दिन अंग्रेज अध्यक्ष के साथ आगरा से सूरत पहँचते समय, कुछ मदारी उनके पास आए और कहने लगे कि क्या आप उनकी कला का प्रदर्शन देखेंगे। वह उनकी कला को देखने के लिए उत्सुक था। सबसे पहले उन्होंने एक तेज आग जलाई और उसमें लोहे की जंजीरों को गर्म होने के लिए रख दिया। इन गर्म जंजीरों को वे अपने शरीर पर मारने लगे। मुझे अहसास हुआ कि उन्हें दर्द हो रहा है, लेकिन वास्तव में उनके शरीर पर चोट का एक भी निशान नहीं था। फिर उन्होंने एक छोटी छड़ी ली और उसे ज़मीन में गाड़ दिया। उन्होंने एक से पूछा कि आप कौन-सा फल खाना चाहते हैं। उसने जवाब दिया - आम। तब एक जादूगर ने स्वयं को कपड़े से ढककर, ज़मीन पर पाँच-छ: बार उठक-बैठक लगाई। मैं उसके पास जाकर देखना चाहता था कि उस आदमी ने ऐसा कैसे किया। मैंने देखा कि उस व्यक्ति ने ब्लेड से अपनी भुजा को काट लिया था। उसने एक लकड़ी पर अपने खून से तिलक किया। हर बार जब भी वह ऊपर उठता वह छड़ी उसकी आँखों के नीचे बढ़ती जाती। तीसरी बार इसमें से टहनियाँ निकलीं और उनमें कलियाँ आनी शुरू हो गईं। चौथी बार वह पेड़-पत्तियों से भर गया तथा पाँचवी बार में हमने देखा उसपर फूल आ गये थे।''

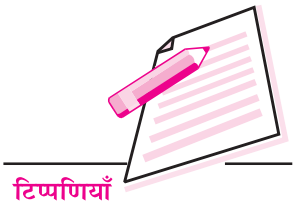

कठपुतली का खेल

कठपुतली भारतीय लोगों की एक महत्वपूर्ण एवं अद्भुत खोज है। कठपुतली का उद्भव ईसा पूर्व द्वितीय सदी में सिल्लपादिकरम में उल्लेखित है। कठपुतली शब्द लेटिन भाषा के शब्द 'पुपा' से लिया गया है जिसका अर्थ 'गुड़िया' है। कठपुतली प्रदर्शन की विषयवस्तु सामान्यत: 'रामायण' और 'महाभारत' महाकाव्यों से है। इसके अंतर्गत सभी रचनात्मक कलाएँ; जैसे- चित्रकारी, मूर्तिकला, नाटक, संगीत और नृत्य इत्यादि है। भारत में लगभग सभी प्रकार की कठपुतलियाँ पाई जाती हैं।

1. रस्सी से नियंत्रित की जाने वाली कठपुतली
2. परछाई कठपुतली
3. छड़ वाली कठपुतली
4. दस्ताने वाली कठपुतली

चित्र 7.19: कठपुतली प्रदर्शन

1. **रस्सी से नियंत्रित की जाने वाली कठपुतली :** कठपुतली का यह प्रकार कठपुतलियों को लचीलापन देने के लिए प्रयुक्त होता है। उनमें जोड़ होते हैं जिन्हें रस्सियों से नियंत्रित किया जाता है। कठपुतली का यह रूप राजस्थान, उड़ीसा, तमिलनाडु और कर्नाटक में काफ़ी प्रचलित है।

2. **परछाई कठपुतली :** परछाई कठपुतली चमड़े से बनी सीधी आकृति की होती है। इन्हें स्क्रीन के सामने दबाकर स्क्रीन के पीछे से रोशनी डाली जाती है जिससे रंग-बिरंगी परछाईयाँ बनती हैं। इस प्रकार के कठपुतली प्रदर्शन आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक में लोकप्रिय हैं।

3. **छड़ वाली कठपुतली :** इसमें कठपुतली को एक छड़ द्वारा नीचे से नियंत्रित किया जाता है। यह दस्ताने वाली कठपुतली की तरह होती है परंतु इसका आकार बहुत बड़ा होता है। कठपुतली का यह रूप पश्चिम बंगाल और उड़ीसा में पाया जाता है।

4. **दस्ताने वाली कठपुतली :** दस्ताने वाली कठपुतली को हस्त अथवा हथेली कठपुतली भी कहा जाता है। इनका नियंत्रण कठपुतली वाला अपने हाथ से करता है। तर्जनी उँगली को कठपुतली के सिर में डाला जाता है तथा मध्यमा और अँगूठे को बाँहों वाली जगह में रखा जाता है। इन उँगलियों गतिविधियों से कठपुतली सजीव हो जाती है।

नुक्कड़ नाटक

नुक्क्ड़ नाटक सड़कों पर किये जाने वाले नाटकों का एक रूप है। नुक्कड़ नाटक प्राचीन समय से जारी है। आज के दौर में नुक्कड़ नाटक की विषयवस्तु बदल गई है। उदाहरण के लिए आजकल नुक्कड़ नाटक की विषयवस्तु सामाजिक-राजनीतिक समस्याएँ है। वर्तमान के मुद्दों के बारे में लोगों के बीच जागृति लाना नुक्कड़ नाटक प्रमुख उद्देश्य है। आम जनता में यह बहुत लोकप्रिय है। इसकी लोकप्रियता के कारण ही आज सैकड़ों अकादमी; जैसे- जन नाट्य मंच, आतिश और योग ज्योति इंडिया फाउंडेशन स्थापित हुई जो नुक्कड़ नाटक का प्रचार-प्रसार कर रही है। सफदर हाशमी उन प्रसिद्ध नुक्कड़ नाटककारों में से एक हैं जो इसके भाष्यकार भी हैं। उद्देश्यपरक नुक्कड़ नाटक से प्रसिद्ध होने के कारण उन्होंने 2 जनवरी, 1989 को अपने प्राणों का बलिदान दे दिया।

क्रियाकलाप 7.3

अपने पड़ोस में कठपुतली प्रदर्शन को देखकर निम्नलिखित सूचनाओं को लिखें :

1. ऐसा प्रदर्शन करने वाले लोग कौन हैं और कहाँ से आये हैं?
2. वे यह प्रदर्शन कब से कर रहे हैं?
3. वे किस प्रकार की कठपुतलियों से प्रदर्शन करते हैं?
4. वे जनता को क्या संदेश देना चाहते हैं?
5. उनके प्रदर्शन को देखने वाले लोगों की प्रतिक्रिया जानिए।
6. अंत में अपने विचारों को देते हुए यह पहचान कीजिए और लिखिए (क) समानता और (ख) असमानता।

पाठगत प्रश्न 7.3

1. रंगमंच के प्रारंभिक उद्भव की विवेचना कीजिए।
2. नुक्कड़ नाटक पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. जरजरा के प्रचलित उद्भव पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

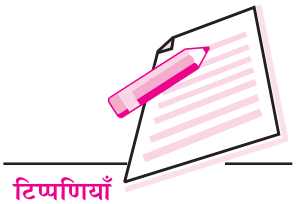

आपने क्या सीखा

- ऐसे कुछ प्रसिद्ध संगीतकार हैं जिनका नाम हमेशा अमर रहेगा। इनमें – (1) हज़रत अमीर खुसरो और (2) मियाँ तानसेन का नाम है।
- दक्षिण भारतीय संगीत जिसे कर्नाटक संगीत के नाम से भी जाना जाता है, को भक्त-संतों से पहचान मिली जिन्होंने 8वीं शताब्दी में स्वयं को ईश्वर से जोड़कर उन्हें प्रसन्न करने के लिए प्रशंसा गीत गाये।
- पश्चिमी राजस्थान में एक समुदाय है जिसे ढ़ाढ़ी कहा जाता है। उनका मुख्य पेशा राजाओं के साथ युद्धक्षेत्र में जाकर दुश्मन सैनिकों के विरुद्ध सेना में जोश भरना था।
- लोकसंगीत स्थानीय परंपरा और आम जनता का हिस्सा है।
- कश्मीर में लोकप्रिय संगीत – छकरी, तंबूर नग़मा और बच-नग़मा है। यह समूह में और छोटे नृत्य के साथ गया जाता है।
- मशहूर गायकों और प्रदर्शनकारियों द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले विभिन्न वाद्य-यंत्रों में बांसुरी, तानपूरा, तबला, वीणा, सितार, शहनाई, सरोद, सारंगी, संतूर और मृदंग इत्यादि हैं।
- भारत में प्रचलित लोकप्रिय नृत्यों में- भरतनाट्यम, मोहनी अट्टम, मणिपुरी, ओडिशी, कथकली, कथक, कुचीपुड़ी इत्यादि हैं।
- नाट्य में तीन मुख्य तत्व (1) संवाद, (2) संगीत और (3) नृत्य होते हैं।
- रंगकला को मुख्यत: निम्नलिखित श्रेणियों में बाँटा जा सकता है-

1. रंगमंच प्रदर्शन
2. नुक्कड़ थियेटर
3. कठपुतली प्रदर्शन
4. नुक्कड़ नाटक।

पाठांत प्रश्न

1. भारत में संगीत के विभिन्न रूपों के विकास का उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।
2. भारत में संगीत के विभिन्न वाद्य-यंत्रों पर वर्णनात्मक टिप्पणी लिखिए।
3. भारत में शास्त्रीय नृत्य के विभिन्न रूप कौन-कौन से हैं? उनकी सूची बनाइए।
4. भारत में नृत्य की प्रारंभिक विकास पर चर्चा कीजिए।
5. नुक्कड़ थियेटर से आप क्या समझते हैं? टवेरियर द्वारा आगरा से सूरत यात्रा के दौरान वर्णित नुक्कड़ नाटक का विवरण प्रस्तुत कीजिए।
6. भारत में पाई जाने वाली कठपुतलियों के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

1. संगीत से संबंद्ध आम जनता द्वारा मेलों, त्योहारों/विवाह-समारोहों में आनंद उठाना।
2. हिंदुस्तानी संगीत भारत-तुर्की रूप का मिश्रण है, जबकि कर्नाटक संगीत ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए बजाया जाता है।

7.2

1. डांडिया नवरात्रि के अवसर पर प्रदर्शित किया जाता है। कलबेलिया एक जनजातिय नृत्य है इसमें साँप की विभिन्न गतियों को नृत्य में दिखाया जाता है।
2. गोवा नृत्य को शिंग्रो त्योहार पर किया जाता है।
3. नृत्य एक प्राकृतिक अभिव्यक्ति है जिसकी उत्पत्ति सौंदर्यबोध और भावना से साकार रूप में प्रकट होती है। हम नृत्य की कलाओं को दो भागों (1) शास्त्रीय नृत्य और (2) लोक नृत्य में बाँट सकते हैं।

7.3

1. रामायण और महाभारत
2. रंगमंच पर पताका लगाकर दानवों अथवा राक्षसों से रंगमंच की रक्षा करना है ताकि वे इसमें व्यवधान उत्पन्न न कर सकें।